ISSN No-2231-5063 Vol.1,Issue.IX/March 2012;pp.1-4

Research Paper

''भूमण्डलीकरण और पॉवर वूमेन : एक अध्ययन''

कुल भूषण त्रिपाठी,
शोध छात्र, हिन्दी विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया,
नई दिल्ली–110025.

प्रस्तावना :–

''पॉवर वूमेन''! भूमण्डलीकरण के गर्भ से उत्पन्न एक आकर्षक शब्दावली जो कि कई तहदार अर्थ रखती है और उसके अर्थ एवं उनके पीछे की गूढ़ताओं को समझने के लिए पहले ''भूमण्डलीकरण'' से परिचय आवश्यक है। सरल शब्दों में भूमण्डलीकरण ''प्रत्येक देश का अन्य देशों के साथ वस्तु, सेवा, पूँजी एवं बौद्धिक संपदा का अप्रतिबन्धित आदान प्रदान है''।इसी परिभाषा को व्यापक अर्थों में समझें तो भूमण्डलीकरण में, व्यक्तियों का, एक देश से दूसरे देश निर्बाध आवागमन, व्यापार प्रतिबन्धों में उत्तरोत्तर छूट, विदेशी निवेश के लिए घरेलू बाजार का खोलना, बेहतर दूरसंचार की अवस्थापना, तकनीक व अविष्कारों का साझा करना शामिल है अर्थात् अब व्यक्ति देश की सीमाओं से निकलकर विश्व नागरिक बनने की ओर अग्रसर है।

व्यक्तियों का, देशों का, यह एकीकरण विचारों, संस्कृतियों और मूल्यों के एकीकरण का माध्यम बनता है। यद्यपि प्रत्येक सिक्के के दो पहलू होते हैं और भूमण्डलीकरण भी इसका अपवाद नहीं, तथापि भूमण्डलीकरण के पक्षधर अपेक्षाकृत विस्तृत होते बाज़ार और उपलब्ध व्यापक टैलेन्ट पूल के सकारात्मक प्रभावों को इसकी सफलता मानते हैं।

भूमण्डलीकरण ने प्रत्येक क्षेत्र में निर्बाधता को जन्म दिया। प्रतिबन्धों का युग समाप्त हो चुका है। यह युग प्रतिस्पर्धा का है न कि संरक्षण का। इस अवधारणा में सबलता, सक्षमता, समर्थता, शक्ति और उत्तरोत्तर विकास पर ज़ोर है। दूसरे अर्थों में, यह योग्यतम की उत्तरजीविता के सिद्धान्त को ही आगे बढ़ाता है। कमज़ोर वर्गों को हाशिये पर ही सिमटते जाना है। समाज के हर वर्ग की तरह स्त्री ने भी शक्ति की प्राप्ति के महत्व को समझ लिया है और इसीलिये जन्म हुआ पॉवर वूमेन अर्थात् सशक्त नारी का। इस पॉवर वूमेन की शक्ति का आधार है उसकी आत्मनिर्भरता। क्योंकि वह अपने पैरों पर खड़ी है इसलिये उसकी आवाज़ को दबाना आसान नहीं। ये पॉवर वूमेन उपलब्ध अवसरों से लाभ उठाने का सामर्थ्य रखती है और उन अवसरों का दोहन करने में सक्षम है। यह शिक्षित होने के साथ अपने चारों तरफ़ हो रहे परिवर्तनों के प्रति चैतन्य और अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिये जागरूक है। यही कारण है कि आज की ये पॉवर वूमेन स्वतन्त्रता और सबलता की प्रतीक बन चुकी है।

पॉवर वूमेन की उत्पत्ति की तह में भूमण्डलीकरण से उत्पन्न प्रेरकों की भूमिका तलाश करें तो स्पष्ट हो जाता है कि इस दिशा में भूमण्डलीकरण के तहत होने वाले रोज़गार के प्रसार का बहुत योगदान है। वैश्वीकरण ने बाज़ार प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ाया, नौकरियों की संख्या में वृद्धि की, विदेशी निवेश और पूँजी प्रवाह को प्रोत्साहित किया, विभिन्न देशों ने तकनीकी ज्ञान को साझा किया और अपेक्षाकृत बड़े टैलेन्ट पूल के निर्माण के लिये शिक्षा के प्रसार, सांस्कृतिक आदान प्रदान, वैधानिक उपायों के क्रियान्वयन और गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से सामूहिक विवेक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया। यद्यपि ये प्रयास भूमण्डलीकरण के पक्षधरों अर्थात् उससे लाभ अर्जित करने वाले देशों ने अपने हित साधने के लिये किये थे परन्तु इस प्रक्रिया में भारतीय नारी का वह वर्ग जो शिक्षित था उभरकर पॉवर वूमेन के रूप में सामने आया। यह भी स्पष्ट कर दिया जाये कि यहाँ पॉवर वूमेन की आम छवि के बारे में बात की जा रही है। ''भूमण्डलीकरण ने ताकतवर प्रतीत होने वाली औरतों का एक विशाल शो–केस बनाया है। घर से बाहर निकलकर दफ्तर जाती स्त्री इस चमकदार पारदर्शी शो–केस के केन्द्र में खड़ी है। वह कार चलाते हुए आत्मविश्वास के साथ शिफ़ान की साड़ी अथवा बिज़नेस सूट पहने हुए कार्यालय के सामने कार पार्क करती है और अपनी हील्स पर खटाखट करते हुए चपरासियों और चौकीदारों के सलामों का जवाब देकर अपनी कारपोरेट चेयर पर जम जाती है। यह औरत एक उच्च पदस्थ आई.ए.एस. या आई.एफ.एस. अफ़सर भी हो सकती है और किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी की मैनेजर भी। यह ब्यूटी क्वीन भी हो सकती है, माडल भी और अपने प्रशंसकों का दिल जीत लेने वाली अभिनेत्री भी, उसकी चपल उँगलियाँ उसे बेहतरीन कम्प्यूटर प्रोग्रामर बना सकती हैं और उसकी शहद भरी आवाज उसे किसी विदेशी बैंक में पर्सनल फ़ाइनेन्स आफिसर की पदवी भी दिला सकती है।''

स्पष्ट है कि यह स्त्री पहले से ही सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक तौर पर अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में थी और भूमण्डलीकरण द्वारा प्रदत्त अवसरों की सीढ़ी के जरिए इसने सफलता के ऊँचे शिखरों को छुआ। सांस्कृतिक उदारवाद के चलते सामाजिक बंधनों व पूर्वाग्रहों में शिथिलता आयी जिससे इन स्त्रियों ने शिक्षा, नर्सिंग, रिसेप्शन, आदि परम्परागत क्षेत्रों से परे कॉरपोरेट जगत, बैंकिंग, तकनीकी, विमानन, मीडिया, रक्षा एवं प्रशासन में पदार्पण किया और अपनी योग्यता एवं कुशलता से सफलता प्राप्त की। भूमण्डलीकरण ने जिस बाजार आधारित उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रसार किया उससे आम व्यक्ति में भी इन लुभावने उत्पादों का मोह पैदा हुआ और इनसे उपजी आवश्यकताओं ने परिवार की आमदनी बढ़ाने का दबाव बनाया। आमदनी बढ़ाने के लिये परिवार की स्त्रियों को भी आगे आना पड़ा। निम्न वर्ग की श्रमिक स्त्रियाँ तो पहले ही आर्थिक क्रियाकलापों में भागीदार थीं, लेकिन उपभोक्तावाद के प्रसार के कारण उपजी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अब मध्यम वर्ग की स्त्रियों को भी परिवार की अर्थ व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए नौकरी करनी पड़ी। इस प्रकार शो–केस वाली पॉवर वूमेन के पीछे आर्थिक रूप से स्वावलम्बी महिलाओं की एक अदृश्य कतार बनने लगी। स्त्री के आर्थिक स्वावलम्बन की आवश्यकता और उसके प्रभावों के सम्बन्ध में रमणिका गुप्ता कहती हैं–

''स्त्री अगर आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी हो तो उस पर जुल्म नहीं होंगे और यदि होंगे भी तो कम होंगे। स्वावलम्बी होने से औरत का स्वाभिमान बढ़ता है और उसका आत्मसम्मान भी। साथ ही वह प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिबन्धों को नकारने की क्षमता हासिल कर लेती है। वह समाज की संकीर्ण परम्पराओं से परे मुक्ति की राह पर चल सकती है। दरअसल औरत को कमज़ोर बनाने में उसके परजीवी होने के साथ–साथ समाज की आचार संहिताएं भी जिम्मेदार हैं। स्वावलम्बन उसे इन बेड़ियों से मुक्त करने का एक मज़बूत आधार देता है।''

जैसे–जैसे भूमण्डलीकरण के कारण रोज़गार और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई मध्यम वर्ग की संख्या बढ़ती गयी। मध्यम वर्ग के इस उभार ने परोक्ष रूप से पॉवर वूमेन की पिछली कतार में इज़ाफा ही किया। सूचना एवं संचार क्रान्ति तथा मीडिया की जनसाधारण तक बढ़ती पहुँच ने भी नारी की मदद की। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने न सिर्फ शिक्षा व अनुसंधान की नयी राहें खोलीं अपितु आज की नारी को ग्लोबल सिटीजन बनाने में भी आधारभूत भूमिका निभायी। भारत की पॉवर वूमेन अपने कार्यक्षेत्र में विश्वस्तरीय सफलतायें अर्जित कर रही हैं। यें स्त्रियाँ जिन्हें भूमण्डलीकरण के पक्षधर अपने बचाव में प्रस्तुत करते हैं वास्तव में विश्व के किसी भी देश की स्त्रियों से कमतर नहीं हैं। मीडिया द्वारा इनके योगदान का सराहा जाना एवं प्रचार प्रसार, एक तरफ़ तो इन्हें अपने कार्य के प्रति और प्रोत्साहित करता है, तो दूसरी तरफ इनसे प्रभावित हो कर अन्य बहुत सी स्त्रियाँ शिक्षा एवं रोज़गार की तरफ अग्रसर होती हैं। मध्यम वर्ग के अभिभावक भी अपनी बेटियों के स्वावलम्बी होने की आवश्यकता का अनुभव करने लगे हैं। इन बदलावों से पॉवर वूमेन की द्वितीय पीढ़ी अस्तित्व में आ रही है।

भारतीय पॉवर वूमेन की उपलब्धियाँ भी कम नहीं। विनीता बाली,

Please cite this Article as : *कुल भूषण त्रिपाठी*, *''भूमण्डलीकरण और पॉवर वूमेन : एक अध्ययन''*: **Golden Research Thoughts (March ; 2012)**

Vol.1,Issue.IX/March 2012;pp.1-4

वोल्टास, कोका कोला से लेकर ब्रिटानिया तक कई कम्पनियों की देश विदेश में विपणन प्रमुख व एम.डी. रहीं। पेप्सिको की सी.ई.ओ. इन्दिरा नूयी फार्च्यून, टाइम्स, फोर्ब्स तथा वाल स्ट्रीट जनरल द्वारा विश्व की सबसे शक्तिशाली महिलाओं में गिनी जाती हैं। आई.सी.आई.सी.आई. कम्पनी की सी.ई.ओ. बैंकर चन्दा कोचर के प्रबन्धन में आई.सी.आई.सी.आई. भारत का सर्वश्रेष्ठ रिटेल बैंक बना। निवेश बैंकर नैना लाल किदवई एच.एस.बी.सी. ग्रुप की जनरल मैनेजर और कंट्री हेड है। प्रीता रेड्डी अपोलो ग्रुप ऑफ हास्पिटल्स की एम.डी. और विस्तारक जिनकी छत्रछाया में अपोलो स्पेशलिटी हास्पिटल कॉर्ड ब्लड और बोन मैरो ट्रांसप्लान्ट करने वाला पहला अस्पताल बना। विद्या छाबड़िया ने 2002 में पति मनोहर छाबड़िया की मृत्योपरान्त 600 मिलियन डॉलर की जम्बो कम्पनी का कार्य भार अपनी पुत्रियों की सहायता से संभाला। 2007 में फोर्ब्स ने उन्हें विश्व की शक्तिशाली महिलाओं में शामिल किया। आई.टी. पेशेवर पद्मा रविचन्दर, पेराट, ओरैकल तथा मरसर आदि कम्पनियों की भारत प्रमुख रहीं। इकोनौमिक टाइम्स की बिज़नेस वूमेन ऑफ़ 2006 मल्लिका श्रीनिवासन मद्रास चैम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। सोनिया मनचन्दा डिज़ाइन हाउस इडियम की डाइरेक्टर हैं। अनु आगा ऊर्जा कम्पनी थर्मैक्स लिमिटेड की प्रमुख रहीं। शहनाज़ हुसैन व वन्दना लूथरा ने सौन्दर्य एवं फिटनेस के क्षेत्र में, एकता कपूर ने टेलीविज़न में, बरखा दत्त व राधिका राय ने मीडिया में, जिया मोदी ने विधि के क्षेत्र में, प्रिया पॉल ने होटल व्यवसाय में, अनुराधा देसाई ने पोल्ट्री व हैचरीज़ उद्योग में और सानिया तथा सायना ने खेल जगत में सफलता के शिखरों को छुआ।

भारतीय राजनीति के क्षेत्र में भी पॉवर वूमेन की चमकती–दमकती छवि दृष्टिगोचर होती है। राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, लोकसभा अध्यक्ष श्री मीरा कुमार, सत्ताधारी दल की प्रमुख श्रीमती सोनिया गाँधी, लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज के साथ–साथ महिला राज्यपालों एवं मुख्यमंत्रियों द्वारा महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई जा रही है। विदेश सचिव जैसे महत्वपूर्ण पद पर निरूपमा राव की नियुक्ति पॉवर वूमेन की छवि को और अधिक सुदृढ़ करती है।

इसके अतिरिक्त अभिनय, माडलिंग और विज्ञापन जगत में सुष्मिता सेन, ऐश्वर्या राय से प्रारम्भ करके बोल्ड एण्ड ब्यूटीफूल स्त्रियों की एक लम्बी कतार नज़र आती है। मीडिया द्वारा प्रचारित इन सेलिब्रिटी पॉवर वूमेन्स से परे देखें तो हम पायेंगे कि भारत में लाखों महिला पंचायत सदस्य अपनी शक्ति का अनुभव व उपयोग कर रही हैं। प्रशासनिक परीक्षाओं में महिलाओं की सफलता दर बढ़ रही है। मध्यम वर्ग की नवयुवतियाँ बी.एड., बी.टी.सी. आदि औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करके शिक्षा के क्षेत्र में पाँव जमा रही हैं। कम्प्यूटर, बैंक, कॉल सेन्टर, इंजीनियरिंग, स्वास्थ्य, कोरियोग्राफी, माडलिंग तथा गैर सरकारी संगठनों जैसे क्षेत्र मध्यम वर्ग की युवतियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। इसके साथ ही महिला श्रमिकों की स्थिति में भी बदलाव आया है। स्त्री श्रमिकों के संगठन सेवा ने 125000 सदस्यों के साथ मिलकर महिला सहकारी बैंक की स्थापना की है और भूमण्डलीकरण की सहायता से ये ग्रामीण महिलाओं तक पहुँच रहे हैं। हस्तशिल्प उद्योग से जुड़ी स्त्रियों को भी बाजार आधारित अर्थव्यवस्था से लाभ हो रहा है। यूनीफेम की सामाजिक उत्तरदायित्व पुरस्कार विजेता, मौना दवे, कच्छशिल्प की निदेशक हैं, जो 110 हस्तशिल्पी महिलाओं का संगठन है और विश्व बाजार में बारगेनिंग पॉवर हासिल कर रहा है।

निस्सन्देह पॉवर वूमेन की ये उपलब्धियाँ सराहनीय हैं परन्तु इस अवधारणा की चकाचौंध के पीछे के सत्य को जानना भी आवश्यक है। क्या कारपोरेट जगत की बड़े पदों पर आसीन इन स्त्रियों को निर्णय लेने की पूरी स्वतन्त्रता है? क्या प्रशासनिक पदों पर कार्यरत महिलाओं को समान दर्जे के कार्य आवंटित किये जाते हैं?क्या पॉवर वूमेन रक्षा और गृह जैसे महत्वपूर्ण मन्त्रालयों के सर्वोच्च प्रशासनिक पदों पर पहुँची हैं?क्या ये महिलाएं पारिवारिक उत्तरदायित्वों से किसी हद तक मुक्त हुई हैं?क्या समाज का, परिवार का, सहकर्मियों और अधीनस्थों का दृष्टिकोण इनके लिये सकारात्मक है?यदि इन प्रश्नों के उत्तर तलाशें जायें तो स्थिति बहुत प्रशंसनीय नहीं है। कारपोरेट जगत की महिलायें जो सर्वोच्च पदों पर आसीन हैं निस्संदेह वे निर्णायक भूमिका निभाती हैं, पर इन्हीं कम्पनियों में कार्यरत महिला कर्मचारी कार्यस्थल पर यौन शोषण का शिकार हैं। उन्हें ऑफिस में निर्णायक और चुनौतीपूर्ण भूमिका निभाने के अवसर कम ही मिलते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि उन्हें कम कार्य करना पड़ता है बल्कि समान घण्टे कार्य और अधिक श्रम के बावजूद उनके कार्य को कमतर मानकर उनके योगदान को अनदेखा किया जाता है। उन्हें आवंटित कार्य उनकी घरेलू भूमिका के विस्तार ही होते हैं जैसेः रिसेप्शन और ऑफिस प्रबन्धन। प्रशासनिक सेवाओं में सम्मिलित होने वाली महिलाओं की सफलता के अनुपात में वृद्धि हुई है पर इस क्षेत्र में भी अधिकांशतः कार्य–विभाजन लैंगिक आधार पर किया जाता है और महिला प्रशासकों को अपेक्षाकृत नर्म कार्य सौंपे जाते हैं। घर से निकलकर दफ्तर जाती यह स्त्री आमतौर पर पुरूष समाज की नजरों में सर्वसुलभ, तेज, चतुर, कुछ ज्यादा ही स्वतन्त्र और फैशनेबल है। उसका पारिवारिक और निजी जीवन, उसका चरित्र पुरूषों ही नहीं महिलाओं के लिये भी कौतूहल और विवेचना का विषय रहता है। उसके आने–जाने, फोन कॉल्स, लिबास, पर्स में बचे पैसे सब कुछ समाज और परिवार की नजरों के दायरे में रहते हैं।

एक आम कामकाजी स्त्री से परिवार को आर्थिक संबल प्रदान करने के साथ कुशल गृह प्रबन्धन की भी उम्मीद की जाती है। उसके घरेलू कार्य कम नहीं हुए हैं। हालांकि आधुनिक उपकरणों ने उसकी सहायता अवश्य की है परन्तु उसी अनुपात में गृह कार्यों की परिधि भी व्यापक हुई है। आज सिर्फ चौका बर्तन और घर की सफाई ही उसके जिम्मे नहीं अपितु बच्चों का होमवर्क, परिवार के सदस्यों के लिये ''पौष्टिक भोजन'', बच्चों की स्कूल मीटिंग्स, घर की साज–सज्जा, मार्केटिंग, परिवार के सभी सदस्यों की सेहत और स्वास्थ्य, सगे सम्बन्धियों से सम्पर्क और सामयिक औपचारिकताओं का निर्वहन, काम करने वालों का हिसाब किताब, छोटी मोटी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के लिये डाक्टरी परामर्श, गैस बुकिंग से लेकर पतिदेव की ऑफ़िशियल गेट–टुगेदर तक अनगिनत कार्य गृहकार्यों की सूची में शामिल कर दिये गये हैं जिससे आज की नारी दोहरी जिम्मेदारी के बोझ तले पिस रही है। ये तमाम कार्य उसके शिक्षित होने के आधार पर उसे आवंटित कर दिये गये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस पॉवर वूमेन से सुपर वूमेन बनने की आशा की जा रही है। फिर यदि वह ऐसा नहीं कर पाती तो उस पर परिवार की अनदेखी या फिर दफ्तर में कार्य कुशलता और कर्तव्य परायणता की कमी के आक्षेप लगते हैं। वस्तुतः परिवार के दायित्व स्त्री की सामाजिक भूमिका के साथ इस तरह जुड़ गये हैं कि इनकी पूर्ति न कर पाने वाली स्त्री स्वयं अपराध बोध से ग्रसित रहती है। दफ्तर और परिवार में सामंजस्य स्थापित न कर पाने के कारण एक ओर तो वह अपने पुरूष सहकर्मियों के समक्ष हीनता का अनुभव करती है दूसरी ओर परिवार व बच्चों की अपेक्षाओं पर खरी न उतरने पर अवसाद ग्रस्त हो जाती है। इस दो तरफा मानसिक यन्त्रणा या अन्तर्द्वन्द का नतीजा होता है– मानसिक अस्थिरता, आत्महत्या, पारिवारिक विघटन और नौकरी से पलायन। सिक्के का दूसरा पहलू ये है कि इस प्रकार की मानसिक अस्थिरता की शिकार स्त्रियाँ मेल–फ़ेमिनिज़्म से ग्रस्त हो जाती हैं और दफ्तर में अपने पुरूष सहयोगियों से अधिक कठोर, निर्मम व भ्रष्ट आचरण करने लगती हैं। बोल्ड एण्ड ब्यूटीफुल की श्रेणी में शामिल अभिनेत्रियाँ, मॉडल और विश्व सुन्दरियाँ कुछ अलग ही प्रकार की यन्त्रणाओं से गुज़रती हैं। पुरूषों को उनकी चकाचौंध चमत्कृत तो करती है पर ऐसी सशक्त महिलाओं को वे शंका की दृष्टि से देखते हैं और उनके साथ लम्बी अवधि सम्बन्ध नहीं बनाना चाहते। अभय कुमार दुबे लिखते हैं–

''भूमण्डलीकरण ने इस नयी औरत को जन्म अवश्य दिया लेकिन वह एक नये मर्द को जन्म नहीं दे पाया जो इस ''पॉवर वूमेन'' के साथ नये तरह के नर– नारी सम्बन्धों का सिलसिला शुरू कर सकता। विश्व सुन्दरी युक्तामुखी का दुख यह है कि वे जिस पुरूष को अपने जोड़ का पाती हैं वह उनसे विवाह करने में हिचकिचाता है। ..... अधिकांश पॉवर वूमेन तीस की उम्र पार कर चुकी हैं, लेकिन वे अभी तक एक ऐसे पुरूष की तलाश में हैं जो उन्हें उनकी सामाजिक और व्यावसायिक हैसियत के साथ पसन्द कर सके।''4 इस प्रकार एक पुरूष से दूसरे पुरूष में अपने जीवनसाथी की तलाश करतीं ये स्त्रियाँ अन्ततः सामान्य स्त्री जीवन के सुखों से वंचित हो कर अवसाद में डूब जाती हैं। मीडिया भी काफी निर्ममता से इनके निजी जीवन को सार्वजनिक बना डालता है।

पॉवर वूमेन के इस मुखौटे के पीछे और बहुत से सत्य हैं जो बताते हैं कि भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति क्या है?विश्व की श्रम शक्ति का 45: स्त्रियाँ हैं जिनमें सिर्फ 1: वर्ग इन पॉवर वूमेन का है।5 शेष खेतिहर श्रमिक, मिल मजदूर, दस्तकार महिलाएं अत्यन्त दयनीय दशा में जीवन यापन कर रही हैं। इन्हें भूमण्डलीकरण के कारण उत्पन्न रोज़गार के अवसर तो मिले परन्तु इससे इनकी दशा में अधिक सकारात्मक परिवर्तन नहीं हुआ क्योंकि परिवार का मुखिया पुरूष होता है। अतः परिवार के अन्दर आय का वितरण उसकी इच्छा पर निर्भर है। स्त्री, समाज का सबसे शोषित वर्ग है परन्तु गरीबी मापने के सूचकांक उसकी निर्धनता और दयनीय दशा की गहनता को नहीं नाप सकते। प्रति व्यक्ति आय कभी भी यह नहीं दर्शा सकती कि एक स्त्री को कितनी व्यय योग्य आय मिल रही है। दूसरी ओर उद्योग, श्रम के स्त्रीकरण पर इसलिये जोर देते हैं क्योंकि स्त्री श्रम की प्रवृत्ति लचीली है। अर्थात् उन्हें अस्थायी रूप से रखा जा सकता है, कभी भी सेवा मुक्त किया जा सकता है, और कम पैसे व खराब कार्य दशाओं में भी अधिक कार्य लिया जा सकता है क्योंकि वे अधिकांशतः संगठित हो कर आवाज नहीं उठा पातीं। स्त्रियों को लैंगिक आधार पर कार्य देकर, उनके श्रम को अकुशल ठहरा कर उन्हें वेतन भी कम दिया जाता है जबकि ये अकुशल कार्य अधिक शारीरिक श्रम की मांग करते हैं। विडम्बना ही है कि पहले तो स्त्री को बुद्धि प्रधान, तकनीक प्रधान कार्यों की बजाए श्रम प्रधान अकुशल कार्यों में लगाया जाता है फिर उनके श्रम को निम्न श्रेणी का ठहरा कर कम वेतन दिया जाता है जिससे न वे अपने

Please cite this Article as : *कुल भूषण त्रिपाठी, ''भूमण्डलीकरण और पॉवर वूमेन : एक अध्ययन''*: **Golden Research Thoughts (March ; 2012)**

Vol.1,Issue.IX/March 2012;pp.1-4

जीवन स्तर और न ही शैक्षिक स्तर में गुणात्मक वृद्धि कर पाती हैं। उनका मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है और वे वास्तव में तकनीकी कार्यों के लिये अयोग्य हो जाती हैं। इस प्रकार ये श्रमिक स्त्रियाँ और इनकी संतानें निर्धनता और अज्ञानता के दुष्चक्र में फंसे रहते हैं।

सशक्त नारी की उद्घोषणा के युग में आज भी स्त्रियों का आयात निर्यात जारी है। सेक्स टूरिज्म चोरी छिपे एक उद्योग बन गया है। ''विदेशों में काम कर रही औरतें, चाहे वे यौन उद्योग में हों, या घरों में नौकरी करती हों, भूमण्डलीकरण के इस युग में सरकारों की विदेशी मुद्रा जरूरतें पूरा करने में मुख्य भूमिका निभाती हैं। फिलीपीन्स औरतों के निर्यात के मामले में सबसे आगे है। उसके लिये इससे होने वाली आय विदेशी मुद्रा का तीसरा सबसे बड़ा स्रोत है। बंगलादेश मध्य–पूर्व, जापान और यूरोपीय देशों में अपनी औरतें भेजता है और उसके विदेशी मुद्रा भण्डार का तीसरा हिस्सा इसी माध्यम से प्राप्त होता है। फिलीपीन्स ने अपनी नर्सों और घरेलू नौकरानियों के निर्यात का कार्यक्रम अधिकारिक रूप से चला रखा है।''6 सरकार द्वारा स्त्री कल्याण के नाम पर चलायी जा रही योजनाओं ने परिवार कल्याण की दिशा में तो कुछ प्रभाव अवश्य छोड़े हैं परन्तु स्त्री की स्वतन्त्रता, निर्णायक क्षमता और समर्थता में नाम मात्र की वृद्धि हुई है। स्पष्ट है कि ये योजनाएँ स्त्री को परिवार का अंग मानकर तैयार की जाती हैं। आवश्यकता है कि परिवार कल्याण के साथ–साथ नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए भी योजनाएं व विकास कार्यक्रम तैयार किए जाएं।

पॉवर वूमेन की उपलब्धियों और उनके पीछे के सच पर दृष्टिपात करने पर उम्मीद की किरण नजर आती है। आज नारी की जो दयनीय दशा है ये सदियों की विरासत है, इसके लिये मात्र भूमण्डलीकरण को दोष देना ठीक नहीं। भूमण्डलीकरण से जादू की छड़ी बनने की अपेक्षा करना व्यर्थ है जो रातों रात स्त्री की दशा एवं दिशा बदल दे। फिर भी भूमण्डलीकरण के कारण होने वाले शैक्षिक प्रचार, सांस्कृतिक प्रसार और मुठ्ठी भर पॉवर वूमेन के सकारात्मक प्रभाव, ग़ैर सरकारी संगठनों और मीडिया के दख़ल ने भारतीय महिलाओं के हितों को स्वर दिये हैं। जमीनी स्तर पर महिलाएं जागरूक हो रही हैं, अपने अधिकार के लिये आवाज़ उठाने की सामर्थ्य पैदा हो रही है, मध्यम वर्ग की बदलती मानसिकता के कारण सामाजिक बंधन शिथिल हुए हैं और पुरूष भी नारी के इस रूप को धीरे–धीरे स्वीकार कर रहे हैं। आज की नारी ने अपनी शिक्षा, विवाह, नौकरी और संतानोत्पत्ति से सम्बन्धित निर्णय लेने आरम्भ कर दिये हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण अब परिवार में भी उसकी स्थिति में परिवर्तन आया है। वह निर्णायक भूमिका निभा रही है और अपनी संतान के बेहतर भविष्य के निर्माण में योगदान कर रही है। यही कारण है कि मीडिया द्वारा प्रचारित पॉवर वूमेन की अवधारणा दिन–प्रतिदिन व्यापक होती जा रही है, पॉवर वूमेन की द्वितीय पंक्ति तैयार हो चुकी है, और उम्मीद है कि शीघ्र ही भारत की सभी महिलाएँ समर्थ, सक्षम, जागरूक और सशक्त होंगी।

सन्दर्भ :

1.सिंह, अमित कुमार, भूमण्डलीकरण और भारत : परिदृश्य और विकल्प, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2009, पृ.सं. 31,
2–दुबे, अभय कुमार, भारत का भूमण्डलीकरण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ.सं. 236,
3–गुप्ता, रमणिका, स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, 2006, पृ.सं. 15,
4–दुबे, अभय कुमार, भारत का भूमण्डलीकरण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ.सं. 242,
5–वही, पृ.सं. 237,
6–वही, पृ.सं. 224,

Please cite this Article as : *कुल भूषण त्रिपाठी, ''भूमण्डलीकरण और पॉवर वूमेन : एक अध्ययन''*: **Golden Research Thoughts (March ; 2012)**